

233
8th Dec
Winder

आर्य समाज

2047 I

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीहरेनवउवाच ॥ जयंतं मालिनिद्विनी
मलमलनालीनी ॥ नूनं सकी प्रमुदवी बुद्धिस्त्वं तज्जवर्धनी
जननि सर्वमुत्तमाना ॥ सन्नात्र स्त्रीवैवस्थीता मातावीत्रावः
लीद्वी ॥ कात्रन्यकत्रवत्सल ॥ जयन्तु यत्र संतता नीवान्म
भुतिगता मयी नीलना ॥ यकत्रवापराहान सकीस्त्वमि
काकया ॥ मृकुरेखासूत्रवागून कफनाग्यदावकुन्दला

कात्रन्याप्रभु ॥ नादसकीस्त्वमसगीयस एसूत्राक्षंगानूपा
स्यत्रयासीयाक्षराणामाचवामाचत्रोमनाईवीका विन्दू
त्रयावधूतावदसूतिस्वयीकीक्षमा जउमकात्रवकयः
संशब्दग यमत्त्वमापदग गत्वत्रयास्वत्रया एगमकात्रवस्थ
यनि आजीनत्वेहवायानि नूपाच श्रीक धुसमाहीनी नूड
मातान्धनमृगकी ॥ सु ॥ क्षात्रीसूर्यामित्राद्यी मनी हान

उगी श्री धी गभस्त्रिक ॥ स्थानुगुगा नूहना व्याच मी ली ह
हो गिगमया सी कानुगुह लभ व कूना ची गाल माहा सं न म
भा ही नी धी उसाता मृ वा विद्र सदा ह नी स्य द ह प्रगा लघ स
म कूना पना न नदी वा सो ध पु दे हे त वी हे त वा घा न ली लान
ग की प्रना मालिनी नूद माला ची ग नूद स की घ गी सी घ या ग
श्वरी सी द मागा विगु स द ग सी नी धा न्या धू वी वा गी सू द

पागी श्री मा नू का सी ल मी का की या म झ ला सी दी ल
श्री वी मु ति र्ग मि ग भ व ना घ्या गी ना गायनी त क ल न द
क लाल क द म ही म नू पा म ह कू म्प या ग प्री या नो कू यं वा
नी ना नूद स स्म हि नी त्व न वा लो न न द द व स्य वी त्स ग
या ना मृ ते म कु मा ग भ नू गे स्मो नी ही स्मा नू ही वी तः
पा ना गु त कू शु संपू म्प दे वी यं वा मृ ते दी व्य पा ना स्म वे नू

ॐ कं काया लिनिः ॥ ॐ कं कं मदी कं म वि कं म च दुः पंच व
 वृ ह फ ड का द्रवः ॥ ॐ म म वे स्ते श्व ना गे गृ मे रु लू नी क य
 म म य मा र्ग प्री य था ग वि श्रा व ता ह्रा सी ती म् ॥ ॐ कं काया
 लि कं दी व य च यानि नू तैः ॐ का न न म स्का न स्वा हा स्व धा का
 न वी म द्र व ष ड् का न द्रुं का न रु द्र का न जा गि ती ती नो म न्या
 दा नी या ती री वा म रु ना र्क्षी नो म् ॥ ॐ कं कं या व ली जा यी ति

साधकेः पूजके मर्म दुलेदीकी मर्थागीहीः यागिनि वृन्दभ
लायके नूडकी दागसेः पूषसया गिनीयागसी श्री प्रददवि
सत्यप्रयमे लावनेः स्रहयू (मि) मयग्य सतस्य दीव्याकरी
दस्थिगा सफयागाल स रपवरी सी द्विन व्याहता वर्तनः
हकी भाय ४ य (०६) क उ क कालं दी कालं गी कालं च गुः प
श्रवसू सफवा श्री श्री सस्मन्य सदा मानवः सापी सस्मा

श्रीश्रीगार्हपत्यवर्गा (ग्रथी) संतक्षः दविपूजान्नागममाहा
शीदिलक्ष्मीपदः हंमश्रीगान्दपानसकाभुवन्मप्रणमप्र
माहादायदृष्टापगुयगिरिस्मन्त्रस्थादवित्त्दीयंमृमंयू
दर्वन्त्रानुकारंमृन्तदीमाहीवसक्तुलाद्यसृगकु
स्थलीः अपिवध्वदृष्टेवन्ने ॥ नागपासेगुययदृष्टादाहु
लिस्तुपित्वंताहंकीर्त्तनादविमृश्यान्निघातमहावाधीनी

सम्प्रगयादात्रवीचदयंतिमाहाकालीकालाग्रीगदप्र
हंस्कृष्टः एमविन्दवक्षद्वन्द्वार्कपूष्यायधेमालिमा
हासत्यन्नकीर्त्तकसचिज्जगत् ॥ सर्ववीगाम्नीकहेनवः हे
त्रवीगान्नागपाहं हंमस्यापत्राधं हंमस्यापत्राधं गीध
॥ एवंमृतामाहादेवी हेनवनंमाहासनागतीलीवीनी
ह्रीं गुनिर्गुतायत्रमश्वरीः ॥ ॐ दंजावाहिष्यजावाहया

मीनमः॥ ॥ॐ॥ ति श्रीमानी क्रायमायं॥ ॥
श्रीगणेशायनमः॥ ॥ॐ॥ नमस्तुमाहमायः सुखाद
हयप्रायतः॥ काकिनीवीश्वधर्मनादाख्याविश्वमी
लीनी॥ अदहायसमस्तनज्वलविश्वधर्मिणी॥ मा
हाकुलनीनित्याहसमवव्यवस्थिता॥ सामसूर्याग्नी
मध्यस्थामामाजीयप्रायतः॥ ॐ॥ कात्रवीयहावस्थ

ह्वात्राद्वर्धधर्मिणी॥ वालाएनमगधसूधमज्वलयास
यपत्रह्वात्राद्वर्धधर्मिणीयधर्मिकिंकल्कमागीर्ण॥ सकला
धमाहमायवत्रदत्ताकयूक्तिर्ण॥ ॐ॥ केकनादीमध्यस्थ
मर्ममकेकलेंदिनिः॥ अष्टाशीसकलादविहदिनीचक्र
त्रयुगः॥ विदुस्तगानिहादवि॥ शुशुभं कुतिलाकृति
वक्ताविष्णुयत्रुदय॥ ॐ॥ वत्रमहदासिव॥ यत्रयमाह

धृताः यादमूलव्यवस्थाः ॥ कुलाकर्तृननिदविनमस्त
सुकीर्त्तयिनी दूरायीगलमध्यस्थमृनाहगकुत्रयीनि
वीन्द्रमध्यत्रगादविकृतिगतवाद्यवन्दीकः पुष्पात्रंकनिका
हासहादसाकावलंस्वीनी ॥ उमाध्याह्निकगणेश्रीहाद
हमदीप्यवर्चसा गुण्यगुण्यास्तुत्राद्यस्थहंसाध्यापाद्यधः
श्रीनिः ॥ लंबाधवत्रदादविदक्षीनात्रगभनिनीः ॥ नाग

एतन्मूर्तिर्गम ॥ धसृगुषवाहिनिः ॥ हृदयधयत्रमान
दगालमूर्द्धाव्यवस्थीताना उर्ध्वठिकसहाधृगुष्मष्टक
समन्वितैः ॥ स्थूलसूक्ष्मत्वसंकुक्षधर्माधर्मः पूटद्वयैः ॥
कार्यकारवकर्तृत्वात्सूक्ष्मनादविगुहः ॥ यत्रास्यत्रगत्र
गुण्यवैतन्यसाधवत्कुर्वे ॥ सर्ववर्धधरीदविगुह्यगत्वति
विगुहः ॥ सुकीमूलमाहावीरः वीरविन्दसमन्वितैः ॥

जगतीप्रमाहमाय ससात्रावगात्रीलीः॥ जयाचवी
रयाएवेवरयंमिवायनादीताः दुम्बूत्रविजम (ध्या) स्थनः
मस्तुपायमावनिः॥ वंरुभाक्षकनीदवि. धाऊमर्कय
वस्थितः॥ उमनिशुंमंहीसकीसूलनमाहवूरुसमः
नितः॥ उमशिग्राम वि. गेरीमायायकपुवादीनी॥ स
कन्दरुत्रविदवीकाधउमरुत्रवि॥ पञ्चसर्वत्रय

स्थलयात्राप्रकीर्तिता॥ जमनाधनत्रय कुनमस्त
हानेत्रवि॥ उष्टुलकत्रविद्युद्विद्वतात्रकादीत्यानना
नमामिदवदवमी. जघात्रघात्ररूपीनी॥ दालामुषीविग
वनिउमादविमहजगी. यागीनीवडीयादवी॥ गेरील
क्षीसत्रस्वनिहंसस्वनाधनादवि. एममूचीसक्तिमलितनी
कोधकीसूत्रगमदेवीदूगर्भकात्यायनीनथनीत्युक्तिगाम

आर्य समाज

2047

I

माम्याताः प्रकाशकाक्षमायताः श्रीमहादेवग्रीवको
मात्रिवेषुवितामवाताहीशेवमाहन्दीरामुन्दात्तया नना
यागसीत्तहीदवशिकुलाष्टकविशुपगज्ज्याष्टकधरीद
वीलक्ष्मीग्रीवदूरपिनीः शुद्धीशेवकुजाग्रयाः याम्याने
मृष्यवाग्रीवायुव्याशेवकोवरीः शुद्धायां समुदाहताः ॥
प्रयागभवतूक्षकात्ताः शुद्धायां जयंतिका ॥ यत्रिशुकाशु

कार्येवदविकासंयुवाष्टमः तथाकालिउमादेवैद्रीन
समुत्तः ॥ रुद्रकालिमाहामायं चर्ममुक्ताहयानन ॥ मा
हाकुंभमाहामाकनमस्तुकीनृपिनीः ॥ तुगुव ० स्वति
स्वाहानंदयानाथकनृध्यात ॥ हानाविशामाहामायं नृ
दीक्षासीवदीन ॥ य ० ० ० दय ० ० ॥ कागुवीसंयवमानवः
प्राप्तिनीनीनाकामान् स्त्रीनांरुतिद्वर्त्त ॥ चतुर्वर्गस्य

जामंग ॥ चतुर्नास्तुसंरुयागदिनहेनर्वमंगुमाहा
मायानभास्तु ॥ ३० ॥ ० ० तिगीसीवसकीसमनस
त्वमाहामायास्तुगुसमाफ ॥ ॥ ० ० ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ॥ ० ॥

[illegible]

किं कुरु स्वाहा ॥ सर्वत्रागम एवम् २ सर्वग्रहा एवम् २ स
 र्वदशामा एवम् २ सर्वयोगा एवम् २ सर्वयन्त्रगम एव
 म् २ सर्ववाद्यानां एवम् २ सर्ववृत्तिकानां एवम् २ हस्तपत्र
 पित्राद्यगम किं निज किं नीय कुमकुवम् २ कीलय २ मर्द
 य २ चूर्णय यथै मर्दय विना धातुं सर्वान् हन एवम् २
 मथ २ घट २ चूर्णय २ चूर्णकल गठयावर्तुं एवम् २

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं नृसिंहं यनमः ॥ ॐ गि श्री नृसिंह पू
जा ॥ ॐ वज्रा सा विरी संवादे नृसिंहक वचं समा फं ॥ ॥
अथ ध्यानं ॥ ॐ सत्यं ह्यनस्य स्वयं यममलं दीया विम
धसु लिंगा ॥ ॐ नृमतिपुसन्नवदना त्रया सहस्रकुलं
अहं च कपि धमक गायव नो न विप्रमन क न कुवीं कुनी
हं न रु दी नृमि नृधवलं श्री नृसिंहं हं हं हं ॥ ॐ
गि ध्यानं ॥ ॥

नित्यं १० ॥ यं नित्यं १० ॥ ॐ नृपृथ्वी गत्वा य व द्रु देवता य स्वाहा ॥
१० ॥ ॐ क्रीं क्रीं जाय गत्वा य विपु देवता य स्वाहा १० ॥ ॐ श्रीं हं हं
गत्वा य नृ देवता य स्वाहा १० ॥ ॐ हं वायु गत्वा य सदा
सि व देवता य स्वाहा १० ॥ ॐ हं आकाश गत्वा य ॐ व न देव
ता य स्वाहा १० ॥ यति स्थ मंत्र ॥ ॐ ॐ क्रीं क्रीं हं स नृम क देव
स्व पा ॐ हं ग क्री व ॐ हं तिष्ठ २ सर्व मा नी सु २ वा हं हं २

बाहाहाधमखचित्रमुखाहा१०॥मूलरुध॥हं हनु एव वा
 हाहंरुद्रमाहा१०८॥ॐरुद्रमाहायविमहं माहाहंरा
 धीमहीत॥हंरुद्रयुवीदया७॥१०८॥काल॥हनुमंतययुसर्व
 गति॥ ॥



